आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 08 अप्रैल, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

बायोमास और सौर ऊर्जा का उपयोग करें सुनिश्चित

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयो और बहनो।

राम–राम सा।

ऊर्जा किसी भी राष्ट्र की प्रगति और औद्योगिकरण की गति को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोत खनिज आधारित हैं जिनमें, कोयला, पेट्रोलियम पदार्थ और आणविक ऊर्जा शामिल है। ऊर्जा के यह स्त्रोत अस्थाई है और कभी भी समाप्त हो सकते हैं। दूसरे नवकरणीय ऊर्जा प्राकृतिक अक्षय ऊर्जा स्त्रोत जैसे सूर्य, पवन, जल और बायोमास आदि से उत्पन्न की जाती है। नवकरणीय ऊर्जा पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए बेहत्तर विकल्प के रूप में सामने आई है। विश्व में लगातार बढ़ रही जनसंख्या के कारण ईंधन की लागत बढ़ने के साथ पंरपरागत ईंधन भण्डारों में भी निंरतर कमी होती जा रही है। पारंपरिक ऊर्जा के मूल्यों में भी आशातीत वृद्धि हो रही है। ऐसे में किसान और पशुपालकों के लिए बायोमास और सौर ऊर्जा के स्त्रोत अत्यंत लाभकारी हैं। सौर ऊर्जा का बढ़ावा समय की मांग है। राजस्थान जैसे शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्र में सौर ऊर्जा एक वरदान स्वरूप है। साथ ही यहां का प्रमुख पशुपालन व्यवसाय बायोमास का प्रचुर भंडार है। पशुपालक भाई गोबर गैस का उपयोग ईंधन के रूप में बिना किसी खर्च के अपनी रोजमर्रा की जरूरत को पूरा कर सकते हैं। गोबर का स्लेज और खाद् कृषि उपज को बढ़ाने के काम में ली जा सकती है। सोलर रूफ टॉप संयंत्र का प्रचलन घरों, गांवों और शहर में तेजी से बढ़ रहा है। क्योंकि इससे बिजली के खर्चे को कम किया जा सकता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय में बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) के तीनों संघटक महाविद्यालयों में सोलर रूफ टॉप संयंत्र स्थापित कर बिजली पर होने वाले व्यय में कमी लाई गई है। नहरी क्षेत्र में किसान और पशुपालकों द्वारा अपने खेतों में सोलर संयंत्र स्थापित कर डिग्गी से फव्वारा सिंचाई जैसे कार्यों पर बिजली पर अपनी निर्भरता में कमी लाई गई है। अब तक राज्य में दस हजार मेगावॉट सौर और पवन ऊर्जा की परियोजनाएं लगी हैं। सत्ताइस हजार मेगावॉट के संयंत्र निर्माणाधीन हैं। मेरा सभी किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों से अनुरोध है कि वे बायोमास और सौर ऊर्जा आधारित ऊर्जा स्त्रोतों का अधिकतम उपयोग करके पशुपालन और खेती–बाड़ी की लागत में कमी लाएं और समय की रफ्तार से आगे बढ़ें।

जयहिन्द।

(प्रो. {डॉ.} विष्णु शर्मा)

रक्षा मंत्रालय द्वारा कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को कर्नल रैंक से नवाजा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को 26 मार्च को वैग पाईपर बैंड की धुनों के बीच एक भव्य पिपिंग समारोह में कर्नल की रैंक से अलंकृत किया गया। वेटरनरी ऑडिटोरियम में आयोजित गरिमामय समारोह में एन.सी.सी. महानिदेशालय, जयपुर के उपमहानिदेशक कर्नल प्रताप सिंह राठौड़ और एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय जोधपुर के ग्रुप कमांडर कर्नल एम. एस. माहर ने प्रो. शर्मा को कर्नल पद के सेवा चिन्ह लगाकर विभूषित किया। इस अवसर पर उन्हें एन.सी.सी. कैडेट ने गार्ड ऑफ ऑनर पेश किया। 1 राज आर. एण्ड वी. स्कवाड्रन एन.सी.सी. के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल पी.पी.एस. ग्रेवाल ने बताया कि डॉयरेक्टर जनरल नेशनल कैडेट कोर एन.सी.सी. रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कुलपति प्रो. शर्मा को राष्ट्रीय कैडेट कौर में अवैतनिक कर्नल कमांडेंट के पद पर भी नियुक्त किया गया है।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

सातवीं प्रसार शिक्षा परिषद् की बैठक का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रसार शिक्षा परिषद् की 7वीं बैठक 23 मार्च को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के समन्वय से ही वांछित परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। विश्वविद्यालय के आधारभूत ढांचे को सामाजिक जरूरतों के मुताबिक तैयार किया गया है। अतः हमें पूरी शिद्दत के साथ अपने कार्यों को अंजाम देना है। कुलपति ने राज्य के 15 पशु विज्ञान केन्द्रों और एक कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यों की समीक्षा बैठक में कहा कि पशुपालन उपयोगी तकनीकों को आम किसान और पशुपालकों तक पहुँचाने के लिए कार्य योजना के तहत कार्य की जरूरत है। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि प्रत्येक पशु विज्ञान केन्द्र में स्वरोजगार के लिए कम मूल्य की तकनीक के मॉडल विकसित कर पशुपालकों को प्रेरित करना होगा। जैविक पशुपालन, पौष्टिक पशु आहार और पशु उत्पादों के प्रसंस्करण और मूल्य संवर्द्धन के प्रदर्शन आयोजित किए जाएं। कुलपति ने बताया कि जैविक पशुपालन पर केन्द्रित प्रशिक्षण पशुपालकों को प्रदान किये जायेंगे ताकि जैविक पशुपालन तकनीकों का लाभ अन्तिम छोर पर बैठे किसानों व पशुपालकों को मिल सके। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। बैठक में पशु विज्ञान केन्द्र और कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के सभी प्रभारी अधिकारियों ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। बैठक में विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, प्रसार शिक्षा के मनोनीत सदस्य, फैकल्टी सदस्य और अधिकारी शामिल हुए।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में देशी गौवंश नस्लों के विकास के लिए राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक ब्यूरो का सह केन्द्र स्थापित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक ब्यूरो, करनाल ने वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में सह केन्द्र स्थापित किया है। यह राष्ट्रीय देशी गौवंश जीनोम केन्द्र एन.बी.जी.सी.–आई.वी. परियोजना के तहत कार्य करेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के आठ पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर विख्यात देशी गौवंश की राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी के संरक्षण, संवर्द्धन और प्रजनन कार्य का किया जा रहा है। विश्वविद्यालय का यह राष्ट्रीय गौवंशीय जीनोम केन्द्र, स्वदेशी गौ नस्लो के लिए सहयोगी केन्द्र के रूप में कार्य करेगा। इन पशुओं के जीनो टाइप डेटा वेटरनरी विश्वविद्यालय में उपलब्ध हो सकेंगे। इस केन्द्र के शुरू होने से राज्य की देशी गौवंश नस्लों के संवर्द्धन और विकास कार्यों को ओर अधिक गति मिलेगी। एन.बी.जी.सी.–आई.बी. निर्धारित प्रशिक्षण अनुसूची के अनुसार जीनोमिक चयन में वेटरनरी विश्वविद्यालय संकाय को प्रशिक्षण प्रदान करेगा। अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमंत दाधीच ने बताया कि इस बाबत वेटरनरी विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय पशु अनुवांशिक ब्यूरो के मध्य इस आशय का एक एम.ओ.यू. किया गया है।

बायोमेडिकल वेस्ट के प्रबंधन व निस्तारण पर ई-सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

सतत पशुचिकित्सा शिक्षा के अर्न्तगत विश्वविद्यालय द्वारा वेटस, पैरावेटस, प्रयोगशाला सहायकों व तकनीकी सहायकों के लिए बायोमेडिकल वेस्ट के उचित प्रबंधन व निस्तारण पर ई–सर्टिफिकेट पाठयक्रम 3 से 5 मार्च को आयोजित किया गया। इस ऑनलाइन पाठयक्रम में 93 प्रतिभागियों ने शिरकत की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि बायोमेडिकल वेस्ट एक गम्भीर समस्या है जिसके उचित निस्तारण में आमजन का स्वास्थ्य व पर्यावरण सुरक्षा निहित है। प्रो. त्रिभुवन शर्मा, निदेशक मानव संसाधन विकास निदेशालय, राजुवास ने भी विचार व्यक्त किये। पाठयक्रम समन्वयक डॉ. रजनी जोशी ने प्रतिभागियों को बायोमेडिकल वेस्ट के उचित प्रबंधन व उचित निस्तारण पर विस्तृत जानकारी दी। ई– सर्टिफिकेट पाठयक्रम में डॉ. भागीरथ बिश्नोई, एसोसिएट प्रोफेसर, मेडिकल कॉलेज, बीकानेर, डॉ. दीपिका गोकलानी, डॉ. मनोहर सेन ने भी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये।

जयमलसर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर संगोष्ठी

वेटरनरी यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत 8 मार्च को गोद लिए गांव जयमलसर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में ग्रामीण पशुपालन महिलाओं और राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने शिरकत की। संगोष्ठी की अध्यक्षता सरपंच भंवरी कंवर ने की। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रो. उर्मिला पानू, डॉ. रजनी जोशी, डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा, डॉ. रूचि मान, डॉ. मनीषा मेहरा, डॉ. गरिमा चौधरी एवं डॉ. ऋतु शर्मा ने महिला स्वास्थ्य, बालिका शिक्षा, कन्या भ्रूण हत्या, टीकाकरण व संतुलित पोषण के तौर–तरीकों से अवगत करवाया। छात्रा कनक रत्नू ने प्रेरणादायी कविता प्रस्तुत की। महिला पशुपालकों को विश्वविद्यालय की ओर से पशुओं के लिए खनिज लवण वितरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने किया।

राज्य स्तरीय ई-पशुपालक चौपाल

पशुओं में फुराव से उत्पादन में होता है नुकसान

वेटरनरी विश्वविद्यालय की राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 10 मार्च, 2021 को आयोजित की गई। पशुओं में फुराव की समस्या और समाधान विषय पर पशुचिकित्सा विशेषज्ञ एवं राजुवास के पूर्व अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन डॉ. जी.एन. पुरोहित ने पशुपालकों से संवाद किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि पशुओं का हीट में आने के बावजूद ग्याभिन नहीं होना एक गंभीर समस्या है जिसे फुराव कहा जाता है। यह दुधारू पशुओं में ज्यादा होती है। विषय विशेषज्ञ डॉ. जी.एन. पुरोहित ने बताया कि गर्भाधान से पूर्व और बाद में बरते जाने वाली सावधानियों और संतुलित पशु आहार से फुराव की समस्या में कमी लाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि अधिक दूध उत्पादन पर ही ध्यान न देकर पशुओं का पोषण और प्रबंधन सही रखना जरूरी है क्योंकि पशु की बच्चेदानी और वीर्य में कमी या वंशानुगत के चलते फुराव की समस्या उत्पन्न होती है। ई–पशुपालक चौपाल में राज्य भर के पशुपालक–किसान विश्वविद्यालय के अधिकारिक फेसबुक पेज से जुड़े।

हरा चारा पशुओं में सही प्रजनन और उत्पादन के लिए जरूरी

वेटरनरी विश्वविद्यालय की राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल में 24 मार्च 2021 को पशुपालन में हरे चारे के महत्व विषय पर पशुपोषण विशेषज्ञ एवं विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश कुमार धूड़िया और निदेशक, आयुर्वेट लिमिटेड, नई दिल्ली डॉ. अनूप कालरा किसानों और पशुपालकों से रू–बरू हुए। इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. धूड़िया ने कहा कि हरा चारा विटामिन्स का एक भरपूर स्त्रोत है जिसमें प्रोटीन और एन्टी–ऑक्सीडेन्ट भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं, अतः पशुओं की प्रजनन और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रतिदिन 15–20 किलोग्राम हरे चारे की मात्रा उनके आहार में सम्मिलित करना जरूरी है। डॉ. अनूप कालरा ने बताया कि मिट्टी में सूक्ष्म तत्वों की खासतौर पर कार्बन तत्व की कमी हो रही है अतः हरा चारा उत्पादन के बाद सूखा चारा और खनिज लवण मिलाकर पशुओं को खिलाने से ही वांछित लाभ प्राप्त किया जा सकता है। हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से बिना मिट्टी के कम पानी और स्थान पर वर्ष पर्यन्त हरा चारा प्राप्त करने की नवीन तकनीकी की जानकारी दी।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलटी

गोद लिए गाढ़वाला के चहुँमुखी विकास की कार्य योजना

गाढ़वाला गांव को विकसित करने की कार्य योजना की कोर्डिनेशन कमेटी की बैठक 16 मार्च को आयोजित की गई। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में जिला अधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि राज्यपाल महोदय के निर्देशानुसार गाढ़वाला के चहुँमुखी विकास के लिए सभी विभागों को अपना महत्ती योगदान करना है। इसमें गांव की जरूरत के मुताबिक ढांचागत विकास, जिला परिषद, शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, पेयजल, स्वच्छता, उद्यमिता विकास और स्वरोजगार के कार्यक्रमों के साथ–साथ जन जागरूकता के कार्य करने हैं। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि गाढ़वाला के राजकीय सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल में विज्ञान व कृषि विज्ञान संकाय खोलने, खेलकूद स्टेडियम बाबत भूमि के आवंटन प्रस्ताव, उप स्वास्थ्य केन्द्र को क्रमोन्नत कर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बनाने, पशुचिकित्सा उप केन्द्र को क्रमोन्नत करना और आयुर्वेद डिस्पेंसरी शुरू करना आदि मुख्य बिन्दुओं पर प्रस्ताव प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। गांव में ऊंटों और देशी गौवंश की संख्या के मद्देनजर पशुपालन विभाग और वेटरनरी विश्वविद्यालय के सहयोग से नस्ल सुधार कार्यक्रम लागू किया जाएगा। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कार्य योजना का प्रस्तुतीकरण किया। बैठक में उपखण्ड अधिकारी मीनू वर्मा, सहित विभिन्न विभागों के अधिकारीगण शामिल हुए।

गाढवाला में नशा मुक्ति संगोष्ठी का आयोजन

गाढवाला गांव में नशा मुक्ति अभियान के तहत 27 मार्च को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नशे की प्रवृत्ति समाज के लिए एक अभिशाप बन गई है। युवाओं के नशे के आदी होने के कारण मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर बहुत बुरा असर पड़ता है तथा परिवार को भी आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लोगों में चेतना और जन सहभागिता से ही इस सामाजिक बुराई को मिटाया जा सकता है। नापासर के थानाधिकारी जगदीश पांडर एवं चिकित्सा विभाग के डॉ. कुलदीप यादव ने नशे से दूर रहने हेतु चिकित्सीय उपचार के साथ–साथ जिला स्तरीय चिकित्सालयों में नशा मुक्ति केन्द्र के बारे में जानकरी दी। सरपंच प्रतिनिधि मोहनलाल ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 10, 17 एवं 24 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 75 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 9, 17, 20, 22 25 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 102 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 6, 10, 15, 19, 23 एवं 26 मार्च को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 89 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 6, 9, 16, 19, 25 एवं 27 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 122 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 10, 18, 22, 26 एवं 30 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 166 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 6, 10, 12, 16, 19, 23 एवं 24 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 164 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 9, 16, 20, 23 एवं 27 मार्च को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 115 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 5, 10, 16, 19, 23 एवं 25 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 86 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 1–5 मार्च को गांव फरीदसर में पांच दिवसीय, 15–16 एवं 24–25 मार्च को दो दिवसीय ऑफलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 12 एवं 19 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 216 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 9, 12, 17, 20, 23 एवं 25 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 176 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, अजमेर

पशु विज्ञान केन्द्र, अजमेर द्वारा 2, 5, 16, 18, 22 एवं 25 मार्च को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 2, 5, 9, 15 एवं 23 मार्च को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 140 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 16–17, 19–20 एवं 24–25 मार्च को दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण तथा 6 एवं 8 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 3, 5, 9, 19, 23 एवं 26 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 4–5 एवं 10 मार्च को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 39 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

सहजन (मोरिंगा)-पशु आहार का वैकल्पिक स्रोत

पशुधन क्षेत्र के विकास के लिए पर्याप्त और पौष्टिक आहार और चारे की नियमित आपूर्ति आवश्यक है। सहजन एक भारतीय मूल का मोरिन्गासाए परिवार का सदस्य है। इसका वनस्पतिक नाम मोरिंगा ओलीफेरा है। सामान्यतया इसे ड्रमस्टिक, सरगवो, मोरिंगा आदि के नाम से भी जाना जाता है। यह तेजी से बढ़ने वाला बहुउद्देश्गीय पेड़ उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में उगाया जाता है। सहजन बिना किसी विशेष देखभाल एवं शून्य लागत पर अच्छी आमदनी देनी वाली फसल है। यह बहुवर्षिक, कमजोर तने और छोटी–छोटी पत्तियों वाला लगभग दस मीटर से भी ऊंचा पौधा होता है । सामान्यतया 25°–30° सेन्टीग्रेड के औसत तापमान इसके लिए बहुत अच्छा रहता है। यह बिना सिंचाई के साल भर हरा भरा और तेजी से वृद्धि कर सकता है । इस वृक्ष की पत्तिया, फल और बीज मानव आहार और पशुओ के चारे, पानी को साफ करने और जैविक कीटनाशक इत्यादि के के रूप में उपयोग होती है। सहजन की पत्तियों में वीटा–कैरोटीन, प्रोटीन, विटामिन सी, कैल्शियम, मैग्नीशियम और आयरन की अच्छी मात्रा होती है। चूंकि सहजन की पत्तियां प्रोटीन से भरपूर होती हैं, इसलिए इसका इस्तेमाल दुधारू पशुओं के चारे के पूरक के रूप में किया जा सकता है। इसके पत्तों में पारंपरिक प्रोटीन सप्लीमेंट्स जैसे कपासिया खल, मूँगफली खल, तिल खल, सूरजमुखी खल आदि की तुलना में बहुत अधिक प्रोटीन होती है। इसके अलावा, पत्ते कई एंटीऑक्सीडेंट और रोगाणुरोधी गुणों से युक्त होते हैं। एक अध्ययन के अनुसार इसमें दूध की तुलना में चार गुणा पोटेशियम तथा संतरा की तुलना में सात गुणा विटामिन सी है।

सहजन के पोषण लक्षण : सहजन के शुष्क भार की पाचनशीलता 72 प्रतिशत, और कच्ची प्रोटीन की पाचनशीलता 29 प्रतिशत तक होती है। इसमें कच्चे फाईबर की मात्रा 10 प्रतिशत होती है और पत्तियों में मैक्रोन्यूट्रिएंट्स उच्च मात्रा पाए जाते हैं। सहजन के पत्तों को अन्य चारे या घास के साथ मिलाकर पशुओं के आहार और पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रभावी रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है।

सहजन के पशु आहार के रूप में लाभः सहजन के ताजा पत्तों को जुगाली करने वालों के आहार में शामिल किया जा सकता है। इसने बकरियों में वृद्धि दर और गायों में दूध की पैदावार पर सकारात्मक प्रभाव दिखाया है। इसमें उच्च मात्रा में प्रोटीन पाए जाते हैं जो दुधारू पशुओं में दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करते हैं। सहजन के पत्तों और हरे तनों को जानवरों को खिलाने से पशुओं का वजन 32 प्रतिशत तक और दूध उत्पादन 43–65 प्रतिशत बढ़ सकता है। सहजन शुष्क मौसम के दौरान पशुओं के लिए पर्याप्त चारा प्रदान कर सकता है। एक बार जब इसकी जड़ें स्थापित हो जाती हैं, तो सूखे की स्थिति में बार–बार होने वाले कटाव के लिए यह प्रतिरोधी है। इसमें प्रति यूनिट क्षेत्र में अच्छी गुणवत्ता के उच्च पत्ती वायोमास का उत्पादन करने की क्षमता है और शुष्क मौसम के दौरान 6 महीने तक लंबे सूखे को सहन कर सकता है। नमक प्रभावित क्षेत्रों में सहजन को चारे की फसल के रूप में उगाया जा सकता है। सहजन की औसतन इससे प्रति वर्ष पांच कटाई करने पर 100–150 टन प्रति हैक्टेयर हरे चारे की उपज प्राप्त हो सकती है।

पशु को कैसे खिलायें : डेयरी पशु को ताजा सहजन को मात्रा शरीर के वजन का 3.75 प्रतिशत के हिसाब से देना चाहिए । दूध में गंध से बचने के लिए सहजन को दूध निकालने के बाद ही खिलाये। मांस के लिए पाले जाने वाले पशुओ को सहजन 6.25 किलो प्रति 100 किलो के हिसाब से दे। भेड़ों के नियमित फीड के पूरक के रूप में प्रति दिन प्रति पशु 5 किलो ताजा सहजन चारा का उपयोग करें।

डॉ. लूणा राम एवं डॉ. मुकेश कुमार गुर्जर
सी.वी.ए.एस., बीकानेर

पोषक तत्वों की कमी बन सकती है रोग का कारण

पोषक तत्वों का पशु की स्वास्थ्य रक्षा तथा उत्पादन में बड़ा महत्व है। भारतीय पशुओं की कम उत्पादकता, वंशागति के अलावा अधिकांशतया कुपोषण के कारण ही है। आहार में एक या अधिक आवश्यक पोषण तत्वों की कमी अथवा उनके ठीक से उपयोग न होने के से कई रोग उत्पन्न होते है। आहार में पोषक तत्वों के बीच असन्तुलन व इनकी कमी से पशु कुपोषण का शिकार हो जाता है। पोषक तत्वों की कमी से उत्पन्न रोग धीरे–धीरे बढ़ते है व बहुधा कई पोषक तत्वों की कमी एक साथ दिखाई देती है।

प्रोटीन व ऊर्जा की कमी : देश के जिन क्षेत्रों में पशुओं को हरा चारा नहीं खिलाया जाता है तथा उन्हें कम पोषक चारे जैसे भूसा, कड़बी, व निम्न कोटि के पुआल पर निर्वाह करना पडता है, उनमें पर्याप्त मात्रा में खुराक न मिलने के कारण प्रोटीन की कमी वाले लक्षण उत्पन्न होते है। ये लक्षण है– कम भूख लगना, शारीरिक विकास रूक जाना, देर से परिपक्वता आने के साथ–साथ प्रजनन क्षमता में कमी आना, पशुओं का गर्म न होना व समय पर ग्याभिन न होना आदि। खुराक की कमी के कारण प्रोटीन की कमी के साथ–साथ ऊर्जा की भी कमी पायी जाती है जिनके फलस्वरूप पशुओं की उत्पादन क्षमता में भी कमी आ जाती है।

विटामिन की कमी : पशु आहार में कई माह तक हरे चारे के अभाव में विटामिन 'ए' की कमी हो सकती है। पशुओं में भूख की कमी, चमड़ी की पर्त खुरदरी व चमक रहित, शारीरिक विकास में कमी, बांझपन, मूत्र संस्थान में पथरी होना, दस्त होते रहना, पशु का गर्म न होना तथा संक्रमण के कारण न्यूमोनिया होना, विटामिन 'ए' की कमी को प्रदर्शित करता है। साधारणतया गौपशु तथा भैंसों में रतौंधी, जीरोप्थैल्मीया व बछड़ों में अन्धापन उत्पन्न हो जाता है। नवजात पशुओं को खीस पिलाकर व बड़े पशुओं को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा उपलब्ध करवाकर विटामिन 'ए' की कमी से बचाया जा सकता है। साधारण अमाशय वाले पशु जैसे सूअर, कुक्कुट के आहार में 'बी' समूह के विटामिनों का होना अति आवश्यक होता है। गर्म जलवायु वाले भारत देश में सूर्य की किरणों के सीधे पड़ने के कारण पशुओं में विटामिन 'डी' की कमी कभी नहीं होती है।

खनिज तत्वों की कमी : दुधारू पशुओं के ब्याने के तुरन्त बाद कैल्शियम की कमी के कारण 'मिल्क फीवर' नामक रोग हो जाता है तथा दूध उत्पादन में कमी व पशु में सुस्ती आ जाती है। कैल्शियम व फास्फोरस की कमी से नवजात बछड़े बछड़ियों में 'रिकेटस' नामक रोग हो जाता है। फास्फोरस की कमी से पशु को भूख कम लगती है तथा पशु 'पाइका' नामक बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं जिसमें पशु मिट्टी, पत्थर, कपड़ा, लकड़ी आदि अखाद्य पदार्थों को खाने लगते है तथा दीवार भी चाटना शुरू कर देते है। पशुओं में आयोडीन की कमी से 'गलगंढ'/घेंघा नामक रोग हो जाता है। ग्याभिन पशुओं में आयोडीन की कमी से गर्भपात हो सकता है या मरे हुए, कमजोर व बिना रोएं के बच्चे पैदा होते हैं। त्वचा कठोर व खुरदरी हो जाती है। ऐसे बच्चों की मृत्यु दर अधिक होती है। मुलायम तथा प्रारम्भ की घास चरने वाले कम आयु के नवजात बछड़ों व मेमनों में मैग्निीशियम की कमी के कारण 'ग्रास टेटैनी' होने का डर रहता है। जिसमें पशु लड़खड़ाने लगता है तथा कमजोरी आ जाती है। लोहे व तांबे की कमी से 'एनीमिया' नामक रोग हो जाता है, पशु कमजोर तथा पीला पड़ जाता है जिसका प्रतिकूल असर उसके दुग्ध उत्पादन पर पड़ता है। तांबे की कमी से पशु गर्मी/पाली में नहीं आते तथा उनकी प्रजनन क्षमता में कमी आ जाती है। खुराक में नमक की कमी होने से पशु को भूख कम लगती है व पशु कमजोर हो जाता है। शरीर भार में कमी, खुरदरी रोएं की पर्त, आंखों की चमक में कमी, कोर्निया का खुरदरापन, दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में कमी, हृदय की असामान्य गति, पानी की कमी के कारण शुष्कता, एक दूसरे पशु की खाल चाटना, धूल चाटना, बार–बार तथा अधिक मात्रा में मूत्र का करना व मूत्र का पीना, नमक की कमी के प्रमुख लक्षण है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

अधिकतम दुग्ध उत्पादन के लिए गायों का परिवर्तन काल में उचित प्रबंधन

हर डेयरी उत्पादक का लक्ष्य अधिकतम लाभ और दूध का उत्पादन होता है उचित सूखा प्रबंधन एक सफल दूध उत्पादन की नींव प्रदान करता है। डेयरी गायों के लिए प्रसव से तीन सप्ताह पहले और तीन सप्ताह बाद का समय परिवर्तन काल कहलाता है। समय की यह अवधि हार्मोनल परिवर्तनों सहित कई परिवर्तनों से जुड़ी होती है, सूखी से दूध देने वाली गाय में परिवर्तन होने के साथ–साथ आहार में भी परिवर्तन होता है। यानी सूखे चारे से बाटा (यानि वह आहार जो अनाज और तेजी से किण्वित कार्बोहाइड्रेट आहार में समृद्व होता है)। डेयरी गायों के चयापचय संबधी विकार बीमारियों का एक ऐसा समूह है जो परिवर्तन काल के तुंरत बाद डेयरी गायों को प्रभावित करता है। इस समय के बाद पहले महीने के दौरान डेयरी गायों में पहचाने जाने वाले कई चयापचय संबधी कई विकार होते है जिसमें से किटोसिस, बांझपन, दुग्ध ज्वर, डाउनर गाय, नाल का ना गिरना, गर्भाशयशोथ (मेट्राराइटिस), थनैला रोग (मास्टिटिस) और आफरा है। चयापचय संबधी विकारों की होने के सबंध में यह देखा गया है कि यह सभी रोग एक दूसरे से अत्यधिक जुड़े हुए है। उदाहरण के लिए दुग्ध ज्वर से प्रभावित गायों में थनैला रोग, नाल का ना गिरना, गर्भाशयशोथ, एलडीए, डिस्टोकिया (जन्म देने में कठिनाई), थनों में सूजन और कीटोसिस होने की संभावना अधिक होती है। एसिडोसिस से प्रभावित गायों में लैमिनाइटिस, एलडीए, दूध बुखार, थनैला रोग और यकृत में वसा होने का खतरा होता है। नाल के ना गिरने से प्रभावित गायों में गर्भाशयशोथ, एलडीए और कीटोसिस का खतरा अधिक होता है। दूध के बुखार, थनैला रोग, लैमिनाअटिस, गर्भाशयशोथ, नाल का ना गिरना और थनों में सूजन से प्रभावित गायों में कीटोसिस और यकृत में वसा होना आम है।

कीटोसिस : यह चयापचय रोग दुग्ध काल के प्रारम्भ में (3–4 हफ्ते) सबसे अधिक होता है और अन्य समस्याओं से संबधित भी हो सकता है, जैसे कि वसा गाय सिंड्रोम, नाल का ना गिरना, थनों में सूजन, गर्भाशयशोथ और विस्थापित एबॉसम। इन अन्य जटिल कारकों के लिए कीटोसिस से ग्रसित गायों की ब्याने के बाद हमेशा रोगों की जांच करवानी चाहिए। कीटोसिस के लक्षणों में भूख का न लगना, असामान्य रूप से वजन का घटना, दूध उत्पादन में अचानक कमी, उदासीनता और अन्य असामान्य संकेत शामिल है। सूखी अवधि के दौरान गायों को अच्छी स्थिति में रखने से कीटोसिस को रोका जा सकता है। ब्याने से 10–15 दिन पूर्व गाय को चारे के साथ बाटा भी देना शुरू करना चाहिए। अनाज को चारे में 300ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से लगभग 3–4किलो के अधिकतम स्तर तक बढ़ाया जाना चाहिए। दुग्ध काल के पहले 6 सप्ताह के दौरान आहार परिवर्तन भी क्रमिक होना चाहिए। दुग्धकाल में अच्छी गुणवत्ता,उच्च ऊर्जा, रूचिकर आहार के साथ–साथ नमक और अन्य खनिजों को भी खिलाया जाना चाहिए।

नाल का ना गिरना: दुधारू गायों में यह एक सामान्य प्रक्रिया है परन्तु उचित प्रबंधन द्वारा इसे 10 प्रतिशत या इससे भी कम कर सकते है। नाल न गिरने से गर्भाशय उचित समय पर अपनी पूर्व स्थिति में नहीं पहुंच पाता इससे गायों की प्रजनन शक्ति प्रभावित होने के साथ–साथ चिरकारी गर्भाशयशोथ से भी ग्रसित हो जाती है। इसका सर्वोत्तम उपाय यह है कि गायों को ब्याने से पूर्व और पश्चात शरीर की स्थिति का स्कोर 3.5 रखना चाहिए यानि गाय न अधिक मोटी और न ही अधिक पतली होनी चाहिए। इन सब के लिए गायों को सूखा काल (45–60 दिन) के संतुलित आहार के साथ–साथ घूमने देना चाहिए, ब्याने के लिए एक साफ और सूखा स्थान तैयार रखना चाहिए और ब्याने के समय उचित स्वच्छता का भी प्रबंध रखना चाहिये। इन सभी प्रयासों से नाल ना गिरने की समस्या को कम कर सकते है। जिन गायों में विटामिन ए, डी और सेलेनियम की कमी होती है उनमें यह समस्या अधिक पाई जाती है। अतः ब्याने के 8 सप्ताह पूर्व इनकी कमी के टीके लगाया जाना काफी लाभदायक सिद्व होता है।

बांझपन: गायों में अस्थायी रूप से प्रजनन क्षमता के घटने की स्थिति को बांझपन कहते है। बांझपन की स्थिति में प्रभावित गाय अपने सामान्य ब्यांत अंतराल (12 माह) को कायम नहीं रख पाती। पोषण संबंधी समस्याओं के कारण होने वाली बांझपन की समस्या ऐसी गायों में पाई जाती है जो या तो बहुत मोटी अथवा दुबली होती है परन्तु जब स्पष्ट पोषण संबधी समस्यायें न हो तो पोषण के अलावा अन्य कारणों जैसे संक्रमण आदि कारणों पर भी विचार किया जाना चाहिए। गाय के शरीर स्थिति का मूंल्याकन महत्वपूर्ण है क्योंकि बेहद पतली या बहुत मोटी गायों की प्रजनन क्षमता काफी कम हो जाती है। बहुत मोटी गायों में अधिक समस्याएं ब्याने के पश्चात होती है जबकि बहुत पतली गायों में प्रजनन समस्याएं समय पर मद चक्र (30–40 दिनों के बाद) के शुरू न होने के कारण होती है। शरीर की स्थिति के स्कोर बनाए रखने के लिए यह जानना जरूरी है कि जो गाय क्रमांक 1 पर हो उसे बहुत पतला माना जाता है और जो गाय क्रमांक 5 पर हो उसे बहुत मोटा। चरम उत्पादन पर, दूध उत्पादन करने वाली गायों को 2.5 के स्कोर से नीचे नहीं जाना चाहिए और 3.5 शरीर की स्थिति पर ही शुष्क अवधि में जाना चाहिए और इस अवधि में 3.5 के स्कोर को बनाए रखना चाहिए। ओवरकंडिशनिंग की स्थिति गाय की प्रारम्भिक स्थिति, उसकी अपनी फीड दक्षता क्षमता, फीड में ऊर्जा सेवन की अवधि, प्रजनन स्थिति और दूध उत्पादन के स्तर पर निर्भर करती है।

आफराः की समस्या के कई कारण जैसे बारीक पिसा हुआ आटा खिलाने से, सड़े–गले चारे से, अधिक मात्रा में रोटी, गुड़, चापड़ा आदि खिलाने से, अचानक आहार व मौसम परिवर्तन से तथा चारे और बाटे का अनुपात बहुत कम होने पर हो सकता है। इस समस्या के बचाव के लिए हरा चारा एक तिहाई और सूखा चारा की मात्रा दो तिहाई रखने के साथ–साथ 50–60 ग्राम नमक भी मिलाना चाहिए। चारे और बाटे का उचित अनुपात रखना चाहिए। चारा खिलाने से पहले पानी पिलाना चाहिए तथा चारा काट के खिलाना चाहिए। अचानक से आहार में परिवर्तन नही करना चाहिए। मौसम में बदलाव होने पर उचित तापमान की व्यवस्था करें।

दुग्ध ज्वर : आमतौर पर यह विकार ब्याने के समय या ब्याने के 72 घटें में होता है। यह दूध उत्पादन की शुरूआत में कैल्शियम की बड़ी मांग के कारण होता है। राशन असंतुलन, विटामिन डी के प्रभाव या पैराथाइरॉइड ग्रंथि की गतिविधि के कारण गाय इस कैल्शियम की मांग को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है, ये सभी घटक शुष्क अवधि के दौरान इन चयापचयों के विनियमन को प्रभावित करते है। दुग्ध बुखार के संकेतों में लड़खड़ाहट, उठने में असमर्थता, मांसपेशियों में कमजोरी, गर्दन का पीछे की ओर घुमाना और लेटना व शरीर का तापमान सामान्य से कम होना शामिल है।

दुग्ध ज्वर का समय पर ईलाज न करवाने से गाय कभी खड़ी नहीं हो सकती है और डाउनर गाय की समस्या से ग्रसित हो जाती है और इस स्थिति के लिए उपचार भी बहुत महंगा होता है। कैल्शियम/फास्फोरस के कारण चयापचय संबधी समस्या के असंतुलन को समायोजित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय ब्याने से एक महीना पहले का है। इस स्थिति को रोकने के लिए निम्न उपाय किए जाने चाहिएः

- कैल्शियम के सेवन को सूखी गाय में ब्याने से पूर्व सीमित करें और किसी भी तरह का अतिरिक्त कैल्शियम न दें। गाय को खिलाए जाने वाले चारे में आमतौर पर कैल्शियम कम होना चाहिए। उदाहरण के लिए 1 किलो रिजका में लगभग 12 ग्राम कैल्शियम होता है। अतः रिजका के साथ अधिक मात्रा में सूखा चारा अवश्य खिलाएं।
- एक 300 किलोग्राम सूखी गाय के लिए कुल कैल्शियम की आवश्यकता लगभग 20 ग्राम/दिन है।
- ऐसा चारा खिलाएं जो पोटेशियम में कम हों और जिन पर पोटेशियम उर्वरक या घोल का छिड़काव न किया गया हो।
- गुड के साथ 15 से 20 ग्राम/दिन की दर से मैग्निशियम सप्लीमेंट डेयरी जानवरों में दूध बुखार को रोकने में मदद करता है।

डॉ. तरूणप्रीत
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अप्रैल, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	प्रभावित जिले			
		अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम सम्भावना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	हनुमानगढ़	झुन्झुनू	–	बारां, बूंदी, चित्तौडगढ़, गंगानगर, झालावाड़, करौली, राजसमंद
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, दौसा, धौलपुर, जयपुर, जैसलमेर, झालावाड़, जोधपुर, कोटा, टोंक
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	अलवर, जयपुर, गंगानगर	जैसलमेर, जोधपुर, सीकर	–	चूरू, बाड़मेर, बीकानेर, दौसा, झुन्झुनू, हनुमानगढ़, नागौर, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	जयपुर, टोंक	–	–	बारां, अजमेर, अलवर, जालोर, झालावाड़, झुन्झुनू, करौली, कोटा, पाली, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर, उदयपुर
पी.पी.आर.	बकरी	बारां	नागौर, जैसलमेर	–	अजमेर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भीलवाड़ा, झालावाड़, झुंझुंनू, करौली, चूरू, कोटा, प्रतापगढ़, राजसमंद, सीकर, उदयपुर
थीलेरिओरिसा	गाय के बछड़े	–	–	–	बांरावाड़ा, भरतपुर, बीकानेर
बोचुलिज्म	गाय	–	जोधपुर, जैसलमेर	–	–
मेंज / पाँव	ऊँट	–	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर	–	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

सूअर पालन को धनराज ने बनाया आय का साधन

धनराज पुत्र श्री डालूराम निवासी 9 एमडी, तहसील अनूपगढ़, जिला श्रीगंगानगर के निवासी है। धनराज काफी सालों से कृषि कार्य करते आ रहे हैं इनके पास कुल 12 बीघा जमीन है जिससे अधिक मुनाफा नहीं हो पाता है इसलिए इन्होंने सूअर पालन को अपनी आय का साधन बनाने की सोची। धनराज पशु विज्ञान केंद्र, सूरतगढ़ के संपर्क में आए तथा यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्होंने पांच पशुओं से अपने इस व्यवसाय की शुरुआत 4 दिसंबर 2020 को की इन्होंने अपने इस व्यवसाय के लिए सर्वप्रथम शैड़ का निर्माण किया जिसमें लगभग 1.50 लाख का खर्च आया इसके बाद इन्होंने लगातार मेहनत की तथा आज इनके पास पांच पशुओं से बढ़कर लगभग 50 पशु हो चुके हैं जिन्हें यह ओर बढ़ाना चाहते हैं। धनराज बताते हैं कि यह व्यवसाय कम आय से अधिक मुनाफा कमाने वाला व्यवसाय है। इस व्यवसाय में अगर आप एक साल ईमानदारी और मेहनत से कार्य करें तो आप प्रतिवर्ष लगभग 2.50 से 3 लाख की आय प्राप्त कर सकते हैं। धनराज समय–समय पर पशु विज्ञान केंद्र सूरतगढ़ के संपर्क में रहते हैं तथा यह अपने पशुओं की समय–समय पर टीकाकरण करवाते हैं तथा खनिज लवण तथा कृमिनाशक दवाइयां समय–समय पर देते रहते हैं। यह केंद्र के वैज्ञानिकों से विचार विमर्श करते रहते हैं। धनराज अपने इस कार्य की सफलता का श्रेय पशु विज्ञान केंद्र सूरतगढ़ तथा अपने परिवार के सदस्यों को देते हैं। यह अपने इस व्यवसाय से काफी खुश भी है।

सम्पर्क–धनराज, 9एमडी, तहसील अनूपगढ़, (श्रीगंगानगर)मो. 9610633777

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

आदर्श पशुपालन में बरती जाने वाली सावधानियां

पशुओं के चारे, पानी और भोजन का प्रबंध, पशुओं के लिए बाड़े का प्रबंध, उनके स्वास्थ्य और प्रजनन की देखभाल पशुपालन का हिस्सा है। कृषि के साथ पशुपालन करना बेहत्तर है क्योंकि इससे पशुओं के लिए चारे और भोजन का और कृषि के लिए खाद् का प्रबंध हो जाता है। एक ग्रामीण परिवार के लिए पशु किसी धन से कम नही है। पशुओं से उन्हें दूध और गोबर मिलता है जिसे बेचकर उन्हें अच्छी खासी आमदनी हो जाती है। गांवों में कई मजदूर और भूमिहीन ग्रामीण होते हैं जिनके लिए पशुपालन एक वरदान है। पशुपालन में केवल गाय या भैंस ही नहीं, भेड़, बकरी और मुर्गी भी आती है। भेड़पालन से ऊन प्राप्त होती है जो भी आमदनी का महत्वपूर्ण जरिया है। मुर्गीपालन से अंडा और मांस मिलता है। सीमित या असीमित आय का एक बढ़िया जरिया पशुपालन है। भैंस और गाय सर्वाधिक दूध देती है। अधिक दूध देने वाली गाय और भैंस की नस्ल का चुनाव जरूरी है। राठी, साहीवाल, गिर, कांकरेज, नागौरी, मालवी इत्यादि गाय की मुख्य नस्लें हैं। मुर्रा नस्ल की भैंस भी सर्वाधिक दूध उत्पादन करती है। बकरी की मुख्य नस्लों में मारवाड़ी, सिरोही व सोजत नस्लें प्रमुख है। पशुओं को दुधारू बनायें रखने के लिए उत्तम पशुपालन आवश्यक है। एक आदर्श पशुपालन के लिए पशुओं की उचित देखभाल आवश्यक है। जिसमें पशुओं को हमेशा साफ–सुथरे माहौल में रखना जरूरी है। अगर बाड़े का माहौल स्वच्छ नही हैं तो पशु बीमार हो सकते हैं। बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। पशुओं के लिए चारे का उचित प्रबंध आवश्यक हैं। पशुओं का मुख्य भोजन ही चारा है, इसलिए चारा प्रबंधन जरूरी है। हरा चारा पशुओं के लिए बेहत्तर है। पशु के लिए पीने के पानी का इंतजाम भी जरूरी है। साफ और स्वच्छ पानी पशु को पिलाना चाहिए। पशु के लिए बाड़े का प्रबंध होना चाहिए। बाड़े में ताजी हवा आने का रास्ता और छप्पर भी होना जरूरी है, क्योंकि सर्दी और बारिश के दिनों में उन्हें सुरक्षा मिलती है। बीमारियों और रोगों से दूर रखने के लिए पशुओं को नहलाना भी जरूरी है। पशुपालन में पशु को नहलाना एक नित्य क्रिया है। चाहे तो उनके बाड़े में ही या फिर तालाब ले जाकर नहलाया जा सकता है जिससे उनके शरीर से परजीवी निकल जाते हैं। समय–समय पर पशुओं को उचित टीका लगाना जरूरी है। पशुपालन से ही डेयरी उद्योग का भविष्य है। डेयरी में दूध, पनीर, दही, घी इत्यादि पशुओं से ही मिलते है। अतः पशुपालकों को इन उत्पादों का प्रसंस्करण और मूल्य सवंर्द्धन करके अधिकतम लाभ लेना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : dccrajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया